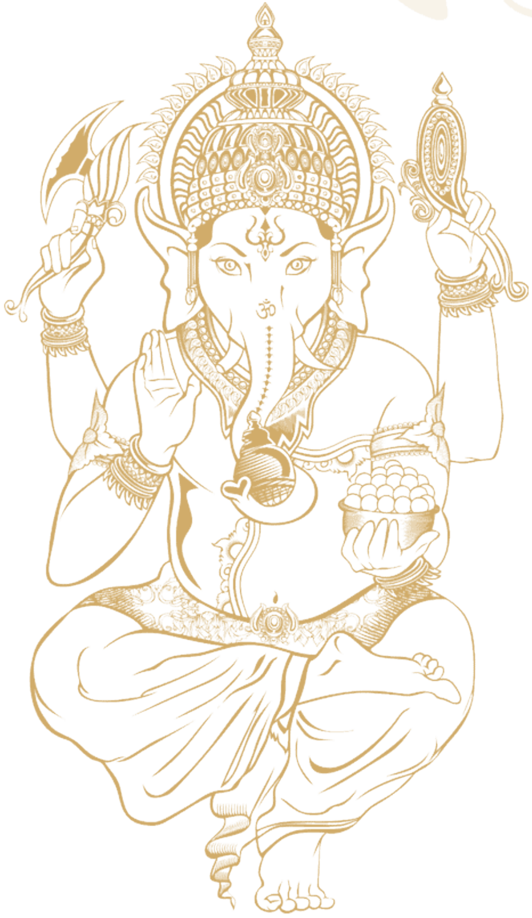

Ankita Singh

05 Jul 1997

10:28 AM

Umaria

Model: Web-MyKundli

Order No: 121846701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**05/07/1997**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**10:28:00 घंटे**
इष्ट	12:37:21 घटी
स्थान	**Umaria**
राज्य	Madhya Pradesh
देश	India

अक्षांश	23:30:00 उत्तर
रेखांश	80:52:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:06:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	10:21:28 घंटे
वेलान्तर	-00:04:32 घंटे
साम्पातिक काल	05:14:24 घंटे
सूर्योदय	05:25:03 घंटे
सूर्यास्त	18:56:55 घंटे
दिनमान	13:31:52 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	19:23:44 मिथुन
लग्न के अंश	25:44:01 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**मिथुन - बुध**
नक्षत्र-चरण	**पुनर्वसु - 2**
नक्षत्र स्वामी	गुरु
योग	व्याघात
करण	किंस्तुघ्न
गण	देव
योनि	मार्जार
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	को-कोमल
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम .... :
पिता का नाम .... :
माता का नाम .... :
जाति .... :
गोत्र .... :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1919	आषाढ़	14
पंजाबी	संवत : 2054	आषाढ़	22
बंगाली	सन् : 1404	आषाढ़	20
तमिल	संवत : 2054	आनी	21
केरल	कोल्लम : 1172	मिथुनम	21
नेपाली	संवत : 2054	आषाढ़	21
चैत्रादि	संवत : 2054	आषाढ़	शुक्ल 1
कार्तिकादि	संवत : 2054	आषाढ़	शुक्ल 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि	1
तिथि समाप्ति काल	25:05:02
जन्म तिथि	1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	पुनर्वसु
नक्षत्र समाप्ति काल	27:42:53 घंटे
जन्म योग	पुनर्वसु
सूर्योदय कालीन योग	व्याघात
योग समाप्ति काल	27:34:07 घंटे
जन्म योग	व्याघात
सूर्योदय कालीन करण	किंस्तुघ्न
करण समाप्ति काल	12:33:33 घंटे
जन्म करण	किंस्तुघ्न
भयात	20:56:25
भभोग	64:03:37
भोग्य दशा काल	गुरु 10 वर्ष 8 मा 25 दि

घात चक्र

मास	आषाढ़
तिथि	2-7-12
दिन	सोमवार
नक्षत्र	स्वाति
योग	परिघ
करण	कौलव
प्रहर	3
वर्ग	मूषक
लग्न	कर्क
सूर्य	मीन
चन्द्र	धनु
मंगल	मेष
बुध	मकर
गुरु	वृष
शुक्र	मिथुन
शनि	कुम्भ
राहु	कर्क

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

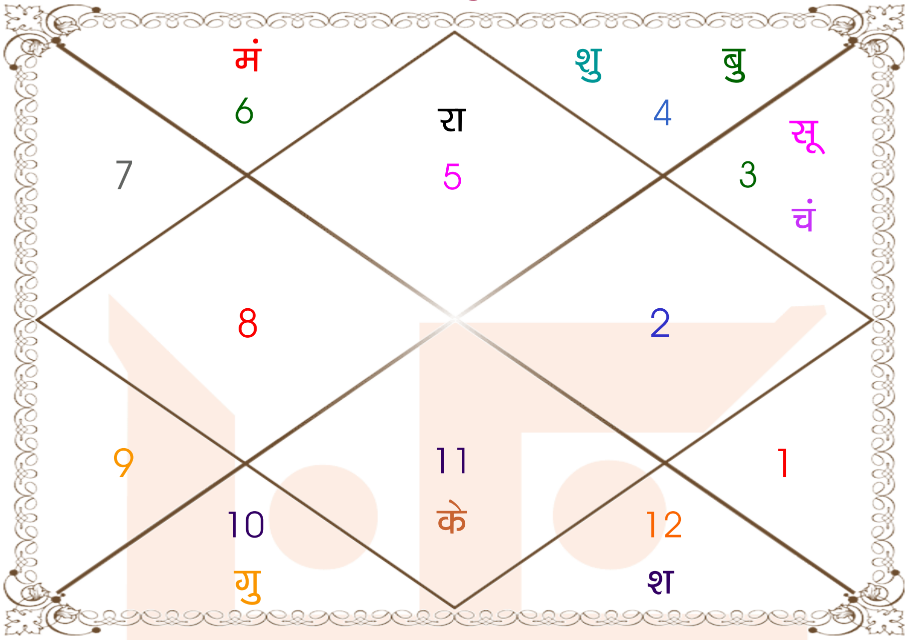

चन्द्र कुंडली

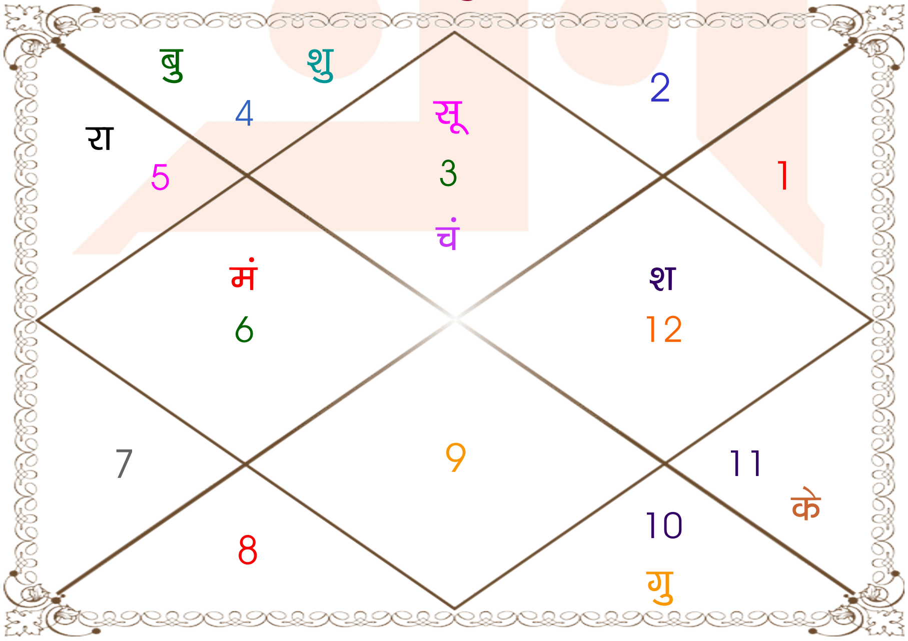

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

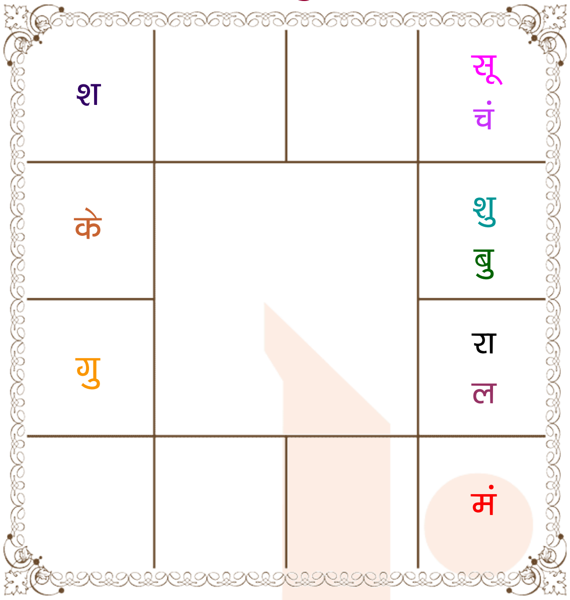

लग्न कुंडली

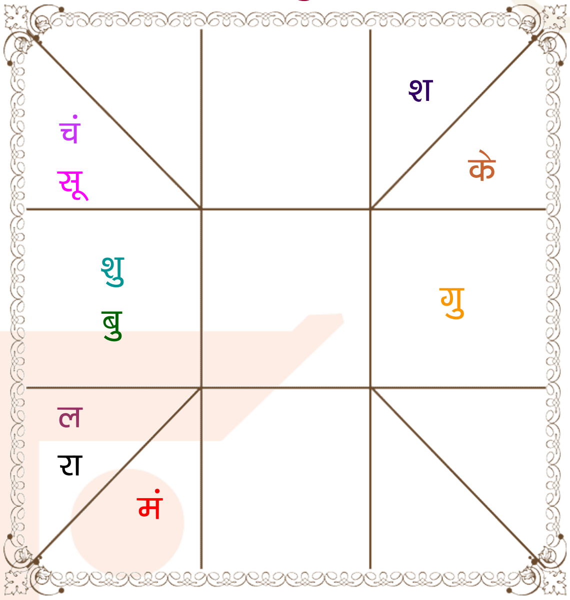

विंशोत्तरी

गुरु 10वर्ष 8मा 25दि

गुरु

05/07/1997

31/03/2112

गुरु	30/03/2008
शनि	31/03/2027
बुध	30/03/2044
केतु	31/03/2051
शुक्र	31/03/2071
सूर्य	30/03/2077
चन्द्र	31/03/2087
मंगल	31/03/2094
राहु	31/03/2112

योगिनी

पिंगला 1वर्ष 4मा 3दि

संकटा

07/11/2023

07/11/2031

संकटा	18/08/2025
मंगला	07/11/2025
पिंगला	18/04/2026
धान्या	18/12/2026
भ्रामरी	07/11/2027
भद्रिका	17/12/2028
उल्का	18/04/2030
सिद्धा	07/11/2031

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	25:44:01	330:03:48	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	---
सूर्य			मिथु	19:23:44	00:57:13	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	मंगल	सम राशि
चंद्र			मिथु	24:23:13	12:31:48	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	मित्र राशि
मंगल			कन्या	13:36:34	00:30:02	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	राहु	शत्रु राशि
बुध		अ	कर्क	00:17:21	01:59:46	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि
गुरु	व		मक	27:07:41	00:04:37	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	गुरु	नीच राशि
शुक्र			कर्क	13:59:22	01:12:49	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	शत्रु राशि
शनि			मीन	25:53:54	00:02:45	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	सम राशि
राहु	व		सिंह	28:20:20	00:11:03	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	28:20:20	00:11:03	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	13:49:04	00:02:06	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	---
नेप	व		मक	05:10:30	00:01:33	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
प्लूटो	व		वृश्चि	09:24:15	00:01:09	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
दशम भाव			वृष	25:41:47	--	मृगशिरा	--	5	शुक्र	मंगल	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:19

लग्न-चलित

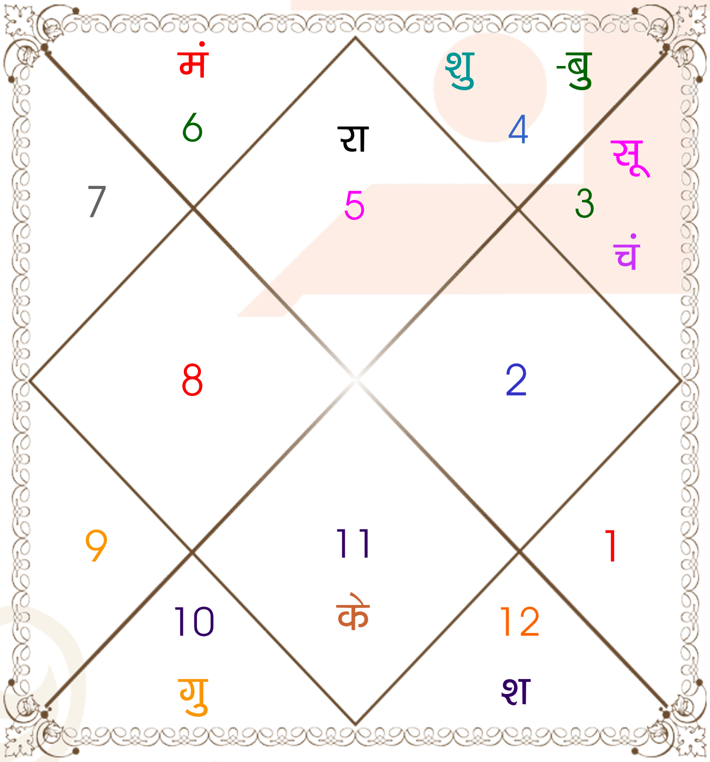

चन्द्र कुंडली

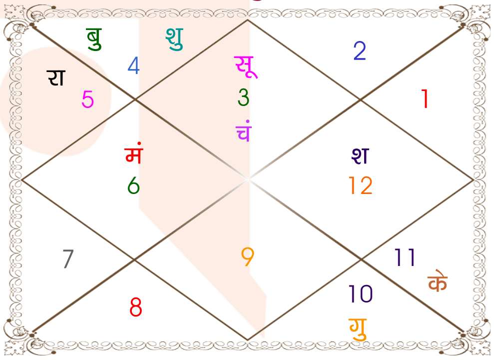

नवमांश कुंडली

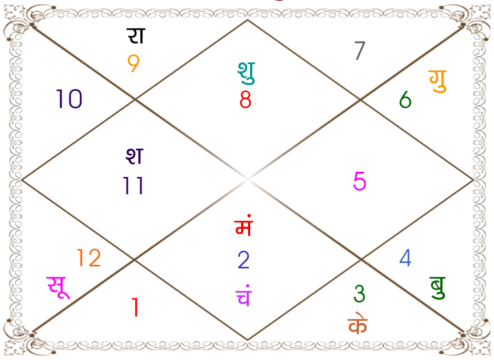

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	10:43:38	सिंह	25:44:01
2	कन्या	10:43:38	कन्या	25:43:16
3	तुला	10:42:54	तुला	25:42:32
4	वृश्चिक	10:42:09	वृश्चिक	25:41:47
5	धनु	10:42:09	धनु	25:42:32
6	मकर	10:42:54	मकर	25:43:16
7	कुम्भ	10:43:38	कुम्भ	25:44:01
8	मीन	10:43:38	मीन	25:43:16
9	मेष	10:42:54	मेष	25:42:32
10	वृष	10:42:09	वृष	25:41:47
11	मिथुन	10:42:09	मिथुन	25:42:32
12	कर्क	10:42:54	कर्क	25:43:16

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	25:44:01
2	कन्या	24:07:18
3	तुला	24:38:18
4	वृश्चिक	25:41:47
5	धनु	26:28:32
6	मकर	26:43:37
7	कुम्भ	25:44:01
8	मीन	24:07:18
9	मेष	24:38:18
10	वृष	25:41:47
11	मिथुन	26:28:32
12	कर्क	26:43:37

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा

चलित कुंडली

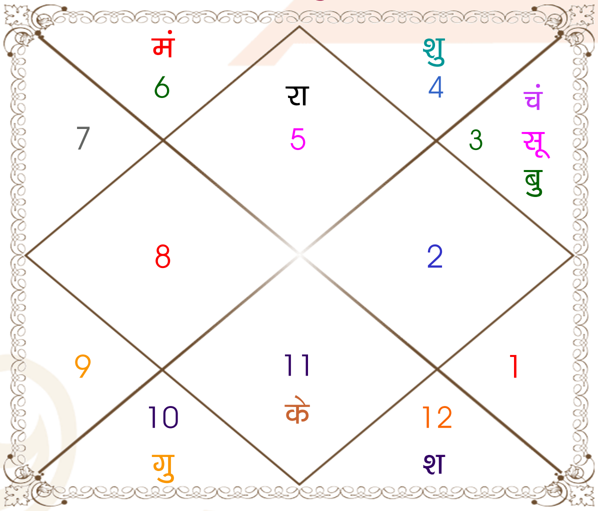

भाव कुंडली

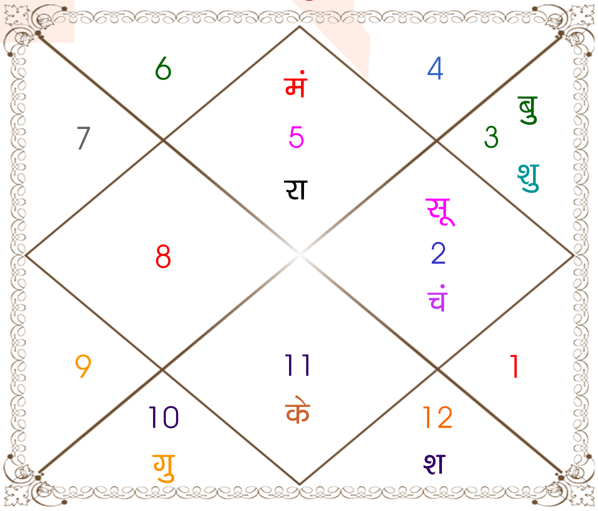

Acharya Ashok guruji trimbakeswar

Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218

ashokgurujitrimbak@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 10 वर्ष 8 मास 25 दिन

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
05/07/1997		30/03/2008		31/03/2027		30/03/2044		31/03/2051	
30/03/2008		31/03/2027		30/03/2044		31/03/2051		31/03/2071	
	00/00/0000	शनि	03/04/2011	बुध	26/08/2029	केतु	26/08/2044	शुक्र	30/07/2054
	05/07/1997	बुध	11/12/2013	केतु	24/08/2030	शुक्र	26/10/2045	सूर्य	31/07/2055
बुध	06/03/1999	केतु	20/01/2015	शुक्र	24/06/2033	सूर्य	03/03/2046	चंद्र	30/03/2057
केतु	10/02/2000	शुक्र	21/03/2018	सूर्य	30/04/2034	चंद्र	02/10/2046	मंगल	30/05/2058
शुक्र	11/10/2002	सूर्य	03/03/2019	चंद्र	29/09/2035	मंगल	28/02/2047	राहु	30/05/2061
सूर्य	31/07/2003	चंद्र	02/10/2020	मंगल	26/09/2036	राहु	18/03/2048	गुरु	29/01/2064
चंद्र	29/11/2004	मंगल	11/11/2021	राहु	15/04/2039	गुरु	22/02/2049	शनि	31/03/2067
मंगल	04/11/2005	राहु	17/09/2024	गुरु	21/07/2041	शनि	03/04/2050	बुध	29/01/2070
राहु	30/03/2008	गुरु	31/03/2027	शनि	30/03/2044	बुध	31/03/2051	केतु	31/03/2071

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
31/03/2071		30/03/2077		31/03/2087		31/03/2094		31/03/2112	
30/03/2077		31/03/2087		31/03/2094		31/03/2112		00/00/0000	
सूर्य	18/07/2071	चंद्र	29/01/2078	मंगल	27/08/2087	राहु	11/12/2096	गुरु	19/05/2114
चंद्र	17/01/2072	मंगल	30/08/2078	राहु	13/09/2088	गुरु	06/05/2099	शनि	30/11/2116
मंगल	24/05/2072	राहु	29/02/2080	गुरु	20/08/2089	शनि	13/03/2102	बुध	06/07/2117
राहु	18/04/2073	गुरु	30/06/2081	शनि	29/09/2090	बुध	30/09/2104		00/00/0000
गुरु	04/02/2074	शनि	29/01/2083	बुध	26/09/2091	केतु	18/10/2105		00/00/0000
शनि	17/01/2075	बुध	29/06/2084	केतु	23/02/2092	शुक्र	18/10/2108		00/00/0000
बुध	23/11/2075	केतु	28/01/2085	शुक्र	24/04/2093	सूर्य	12/09/2109		00/00/0000
केतु	30/03/2076	शुक्र	29/09/2086	सूर्य	30/08/2093	चंद्र	14/03/2111		00/00/0000
शुक्र	30/03/2077	सूर्य	31/03/2087	चंद्र	31/03/2094	मंगल	31/03/2112		00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 10 वर्ष 9 मा 7 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
17/09/2024		31/03/2027		26/08/2029		24/08/2030		24/06/2033	
31/03/2027		26/08/2029		24/08/2030		24/06/2033		30/04/2034	
गुरु	18/01/2025	बुध	02/08/2027	केतु	17/09/2029	शुक्र	12/02/2031	सूर्य	09/07/2033
शनि	13/06/2025	केतु	23/09/2027	शुक्र	16/11/2029	सूर्य	05/04/2031	चंद्र	04/08/2033
बुध	22/10/2025	शुक्र	16/02/2028	सूर्य	04/12/2029	चंद्र	30/06/2031	मंगल	22/08/2033
केतु	15/12/2025	सूर्य	31/03/2028	चंद्र	03/01/2030	मंगल	30/08/2031	राहु	08/10/2033
शुक्र	19/05/2026	चंद्र	13/06/2028	मंगल	24/01/2030	राहु	01/02/2032	गुरु	18/11/2033
सूर्य	04/07/2026	मंगल	03/08/2028	राहु	20/03/2030	गुरु	18/06/2032	शनि	06/01/2034
चंद्र	19/09/2026	राहु	13/12/2028	गुरु	07/05/2030	शनि	29/11/2032	बुध	19/02/2034
मंगल	12/11/2026	गुरु	09/04/2029	शनि	03/07/2030	बुध	24/04/2033	केतु	09/03/2034
राहु	31/03/2027	शनि	26/08/2029	बुध	24/08/2030	केतु	24/06/2033	शुक्र	30/04/2034

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
30/04/2034		29/09/2035		26/09/2036		15/04/2039		21/07/2041	
29/09/2035		26/09/2036		15/04/2039		21/07/2041		30/03/2044	
चंद्र	12/06/2034	मंगल	21/10/2035	राहु	12/02/2037	गुरु	03/08/2039	शनि	24/12/2041
मंगल	12/07/2034	राहु	14/12/2035	गुरु	17/06/2037	शनि	13/12/2039	बुध	12/05/2042
राहु	28/09/2034	गुरु	31/01/2036	शनि	11/11/2037	बुध	08/04/2040	केतु	08/07/2042
गुरु	06/12/2034	शनि	29/03/2036	बुध	23/03/2038	केतु	26/05/2040	शुक्र	19/12/2042
शनि	26/02/2035	बुध	19/05/2036	केतु	16/05/2038	शुक्र	11/10/2040	सूर्य	06/02/2043
बुध	10/05/2035	केतु	09/06/2036	शुक्र	19/10/2038	सूर्य	21/11/2040	चंद्र	29/04/2043
केतु	09/06/2035	शुक्र	08/08/2036	सूर्य	04/12/2038	चंद्र	29/01/2041	मंगल	26/06/2043
शुक्र	04/09/2035	सूर्य	26/08/2036	चंद्र	20/02/2039	मंगल	19/03/2041	राहु	20/11/2043
सूर्य	29/09/2035	चंद्र	26/09/2036	मंगल	15/04/2039	राहु	21/07/2041	गुरु	30/03/2044

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
30/03/2044		26/08/2044		26/10/2045		03/03/2046		02/10/2046	
26/08/2044		26/10/2045		03/03/2046		02/10/2046		28/02/2047	
केतु	08/04/2044	शुक्र	05/11/2044	सूर्य	02/11/2045	चंद्र	21/03/2046	मंगल	11/10/2046
शुक्र	03/05/2044	सूर्य	27/11/2044	चंद्र	12/11/2045	मंगल	02/04/2046	राहु	02/11/2046
सूर्य	10/05/2044	चंद्र	01/01/2045	मंगल	20/11/2045	राहु	04/05/2046	गुरु	22/11/2046
चंद्र	23/05/2044	मंगल	26/01/2045	राहु	09/12/2045	गुरु	02/06/2046	शनि	16/12/2046
मंगल	31/05/2044	राहु	31/03/2045	गुरु	26/12/2045	शनि	05/07/2046	बुध	06/01/2047
राहु	23/06/2044	गुरु	27/05/2045	शनि	15/01/2046	बुध	05/08/2046	केतु	15/01/2047
गुरु	12/07/2044	शनि	02/08/2045	बुध	02/02/2046	केतु	17/08/2046	शुक्र	09/02/2047
शनि	05/08/2044	बुध	01/10/2045	केतु	10/02/2046	शुक्र	22/09/2046	सूर्य	16/02/2047
बुध	26/08/2044	केतु	26/10/2045	शुक्र	03/03/2046	सूर्य	02/10/2046	चंद्र	28/02/2047

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 9, 2
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	89%	धनार्जन, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	83%	धन, भाग्योदय, सुख
गोमेद	राहु	70%	स्वास्थ्य, धनार्जन
पन्ना	बुध	50%	कम खर्च, धनार्जन, धन
हीरा	शुक्र	50%	कम खर्च, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
मोती	चंद्र	47%	हानि, व्यय
पुखराज	गुरु	25%	शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना
लहसुनिया	केतु	16%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

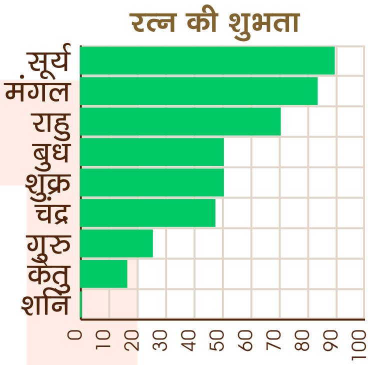

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	30/03/2008	95%	55%	89%	25%	50%	25%	0%	70%	16%
शनि	31/03/2027	77%	22%	70%	56%	25%	56%	0%	77%	0%
बुध	30/03/2044	95%	22%	83%	62%	25%	56%	0%	70%	16%
केतु	31/03/2051	77%	22%	89%	50%	25%	56%	0%	58%	41%
शुक्र	31/03/2071	77%	22%	83%	56%	25%	62%	0%	77%	28%
सूर्य	30/03/2077	100%	55%	89%	50%	38%	25%	0%	58%	0%
चंद्र	31/03/2087	95%	61%	83%	56%	25%	50%	0%	58%	0%
मंगल	31/03/2094	95%	55%	95%	25%	38%	50%	0%	58%	28%
राहु	31/03/2112	77%	22%	70%	50%	25%	56%	0%	83%	0%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढेसाती तृतीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	------------------------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	------------------------	------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	------------------------	------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	------------------------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढेसाती तृतीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	------------------------	------------------------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	------------------------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	व्यय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में है अतः आप चन्द्र कुंडली से मांगलिक हैं। चूंकि यह योग भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा चल एवं अचल सम्पत्ति को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगी। शारीरिक रूप से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगी तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। इसके प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी रुकावटें उत्पन्न होंगी परन्तु अन्ततः इस में सफलता मिल ही जाएगी। आपके पति का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा लेकिन इसका दाम्पत्य जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सुख पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ रहेंगी।

चतुर्थ भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगी। इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि से आपके पति का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी लेकिन सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक नित्य उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति भी हो सकती है तथा समाज से इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में भी आपको सफलता मिलेगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इसके अतिरिक्त परिश्रम पूर्वक आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी आप समर्थ रहेंगी।

मंगल की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली

में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपको इच्छित मात्रा में सांसारिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा चल एवं अचल सम्पति को बनाने में भी आप समर्थ रहेंगी। साथ ही सर्वत्र सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं जीवन में एक दूसरे को सुख तथा सहयोग प्रदान करके आप आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है।

आपकी कुडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के

कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, रक्तरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(30/03/2008 - 31/03/2027)

महादशा शनि की अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 30/03/2008 को आरम्भ और 31/03/2027 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह स्वाभाव से एक अशुभ ग्रह है। यह बाधा-ग्रह के रूप में जाना जाता है और इसके कारण परिश्रम का फल प्राप्त होने में विलम्ब होता है हालाँकि यह फल से वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य फल की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में अष्टम, द्वितीय तथा पंचम भाव पर दृष्टि है और यह उनके कार्य को प्रभावित करता है। अष्टम भाव, जिसमें यह स्थित है, दीर्घायु, विरासत, पैतृक सम्पत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, असन्तोष, पराजय, हानि, बाधा ओर चोरी का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शनि अष्टम भाव को बल प्रदान कर रहा है। दीर्घायु का कारक होने के कारण यह लम्बी आयु तथा प्रसन्नता देता है। विदेश में स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

धन-सम्पत्ति :

अष्टम भाव में शनि की स्थिति के कारण आपके जमीन, बाहन, शक्ति तथा पद की प्राप्ति होगी। यह चल-अचल सम्पत्ति की वृद्धि में आपकी सहायता करेगा और अनेक उत्तरदायित्व का भार भी वहन करना होगा। आप अपने मार्ग में आनेवाली विभिन्न कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करते हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन करेंगे।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करेंगे। व्यावसायिक जीवन में अनेक गम्भीर समस्याएं आ सकती हैं। पैतृक सम्पत्ति तथा व्यापार में भी बाधाओं और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

पारिवारिक जीवन :

व्यावसायिक तथा व्यापारिक जीवन की तरह ही आपका पारिवारिक जीवन भी दुर्भाग्य, बाधाओं तथा समस्याओं से घिरा है। आपको इन बाधाओं का सामना करना है। आप अपने घर से दूर ओर दूसरी जाति की औरतों की ओर आकृष्ट हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

व्यापारिक तथा पारिवारिक जीवन की तरह ही आपकी शिक्षा के क्षेत्र में भी बाधाएं आएंगी।

महादशा :- बुध
(31/03/2027 - 30/03/2044)

बुध की महादशा 31/03/2027 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 30/03/2044 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध बारहवें भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा थी। शनि के कारण आपका कुछ अप्रत्यशित परिवर्तन, साझेदारी में नुकसान तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मामूली समस्या हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपका व्यय होगा, शत्रुओं पर विजय तथा विदेशी स्रोतों से लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बुध की अपनी ही राशि में स्थिति के कारण आपको कोई गंभीर या बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु, विषाणुजन्य बुखार, संक्रामक बीमारी, आँखों तथा पैरों में पीड़ा, चर्मरोग तथा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको दूर स्थानों से लाभ होगा, किन्तु व्यय भी होगा। इसलिए अर्थ की उचित व्यवस्था आवश्यक है। आपको अपनी माता से कुछ लाभ हो सकता हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए लेखा, पत्रकारिता, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, अस्पताल का कार्य या अन्य दातव्य संस्थाओं, विमान-विज्ञान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हें। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर, हाथ के बने सामान यादि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की यात्रा, व्यवसाय-व्यापार में सफलता तथा सहयोगियों से सहयोग मिलेगा।

आपके सम्मान में उन्नति होगी और आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों की यात्रा, धन तथा कठिन श्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होगी। विदेश से कारोबार, विरोधियों पर विजय तथा व्यापार की उन्नति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको सुख तथा वाहन की प्राप्ति होगी। सम्पत्ति का लेन-देन भी हो सकता है। आप जमीन-जायदाद खरीद या बेच सकते हैं। किन्तु बुध की अन्तर्दशा में सावधानी बरतें, अन्यथा नुकसान हो सकता है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और दूर की यात्राएं हो सकती हैं।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। शिक्षा के क्षेत्र में कुछ शुभ परिवर्तन हो सकता है। इस दशा के दौरान आप कुछ शोध-परियोजनाएं आरम्भ कर सकते हैं। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य, व्यवसाय और अन्तरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है।

परिवार :

आपका परिवार के साथ संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता होगी। आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्याएं, शत्रुओं पर विजय तथा कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल हो सकती है। जीवन साथी के साथ संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता को समृद्धि तथा पिजा को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जीवन वृत्ति सफल होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपकी अध्यात्म में रुचि होगी और दान-पुण्य तथा शुभ कार्यों पर व्यय करेंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यय और यात्रा होगी और रोजगार के अवसर मिलेंगे। केतु कुछ समस्या उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में सुख तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा आनन्द की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल की अन्तर्दशा में शक्ति और अधिकार, जीविकापार्जन में सफलता तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा में समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में कुछ नुकसान तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं होंगी।

अंतर्दशा :- बुध - बुध
(31/03/2027 - 26/08/2029)

आपके लिए बुध की महादशा 31/03/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 31/03/2027 को प्रारंभ होकर 26/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। ध्यान, तंत्र-मंत्र आदि में रुचि होगी। अंतर्ज्ञान शक्ति का विकास हो सकता है। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। प्रगति में बाधा आ सकती है। मामा पक्ष से लाभ होगा। मुकदमे में जीत होगी।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी, संपत्ति से आय उत्तम होगी, घरेलू सुख रहेगा। माता धनी होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, प्रसिद्धि, उच्चाधिकारियों से सहयोग, धनलाभ, घरेलू सुख, उत्तम शिक्षा का संकेत है। आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, शिक्षा पूर्ण हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो किसी परिवर्तन के बाद प्रगति हो सकती है; अचानक लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से सहयोग करने पर लाभ होगा। व्यापारियों को स्पर्धा का सामना करना होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे और व्यस्त रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। नेत्रों और त्वचा के विकारों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए गाय को हरी घास और सब्जी खिलाएं।

अंतर्दशा :- बुध - केतु
(26/08/2029 - 24/08/2030)

आपके लिए बुध की महादशा 31/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 26/08/2029 को प्रारंभ होकर 24/08/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा। समाज में सफलता मिलेगी, लोकप्रिय और प्रसिद्ध बनेंगे। व्यापार में वृद्धि होगी, विदेश यात्रा या विदेशों से व्यापार संभव है। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। शत्रुओं और विरोधियों पर विजय होगी। केतु की लग्न पर दृष्टि के कारण आत्मविश्वास और संकल्प उत्तम रहेंगे। अध्यात्म और सात्विक जीवन में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी प्रत्येक कार्य सोच-समझकर करेंगे। आपके पिता का धनार्जन

Acharya Ashok guruji trimbakeswar
Kalyan Bhavan ring road trimbakeswar nashik

9881239218
ashokgurujitrimbak@gmail.com

उत्तम होगा; सम्मानित होंगे, धनी बनेंगे। माता कुछ अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए निवेश से लाभ, अध्ययन और अध्यात्म में रुचि, सौभाग्य, पिता से उत्तम संबंध का संकेत है।

आपकी संतान को सफलता और प्रशंसा मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल होंगे; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर सफल रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधिओं को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए कुत्ते को भोजन दें।

अंतर्दशा :- बुध - शुक्र
(24/08/2030 - 24/06/2033)

आपके लिए बुध की महादशा 31/03/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 24/08/2030 को प्रारंभ होकर 24/06/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ेंगे, मगर सीमा में रहेंगे। धन की बचत होगी। आप दयालु और धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे। सब सुख और सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। शत्रुओं पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ होगा। खेती और बागबानी से अच्छी आय हो सकती है। पालतू जंतुओं से सुख मिलेगा। मुकदमे में जीत होगी।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय होगी। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय करेंगे, धनी बनेंगे। आपकी माता भाग्यशाली होंगी, यात्राएं करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में सफलता, अच्छी आय, उत्तम जीवन, विभिन्न माध्यमों से आय, भोग-विलास की वस्तुओं की प्राप्ति का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कोई अप्रत्यशित घटना घट सकती है। धन का लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भागीदारी से लाभ होगा, व्यस्तता बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की लघु यात्राएं हो सकती हैं, मार्केटिंग और बारीकी के कार्य में लाभ होगा। व्यापारी स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नेत्रों और शरीर के निचले अंगों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः